



## Be Mains Ready

### सम्पूर्ण टेस्ट पाठ्यक्रम सामान्य अध्ययन पेपर 1

1. उत्तरी भारतीय राज्यों में हिमालय क्षेत्र में मंदिर वास्तुकला का एक अनूठा रूप विकसित हुआ। स्पष्ट कीजिये। (150 शब्द)
2. राष्ट्रवाद का साम्राज्यवाद के साथ संयोजन, 1914 में यूरोप को वित्तकी ओर ले गया। टिप्पणी कीजिये। (150 शब्द)
3. प्रागैतिहासिक चित्रकला से हमें प्रारंभिक मानवों की मनोदशा (दमिगी स्थिति) समझने में सहायता मिलती है। सुस्पष्ट कीजिये। (150 शब्द)
4. अधिकांश महाद्वीपों की तुलना में अंटार्कटिका वैश्विक जलवायु परिवर्तनों को बनाए रखने में एक बड़ी और महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विश्लेषण कीजिये। (150 शब्द)
5. सांप्रदायिकता क्या है? क्या आप सहमत हैं कि सांप्रदायिकता की समस्या औपनिवेशिक शासकों की भारत को एक भेंट है? (150 शब्द)
6. वेल्लेज़ली की विस्तार नीति के अंतरनिहित कारण एवं शक्तियाँ कौन-सी थीं? (150 शब्द)
7. भारत में युवाओं पर वैश्वीकरण के विभिन्न सामाजिक-आर्थिक प्रभावों की चर्चा कीजिये। (150 शब्द)
8. भारत में जाति तथा आर्थिक असमानता के मध्य संबंध स्थापित कीजिये। जाति असमानता के उन्मूलन हेतु अभिकल्पित कुछ नीतिगत उपायों का वर्णन कीजिये। (150 शब्द)
9. 'भारत छोड़ो' आंदोलन की सबसे बड़ी उपलब्धि यह थी कि इसने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध भारतीय जनता को एकजुट किया। चर्चा कीजिये। (150 शब्द)।
10. पश्चिमी विक्रम की व्याख्या करते हुए भारतीय मौसम प्रणालियों पर उसके प्रभाव का वर्णन कीजिये।
11. भारत में लिंग आधारित हिंसा के कारणों पर चर्चा कीजिये। यह देश में महिलाओं के विकास को कैसे बाधित करता है? (250 शब्द)
12. दक्षिण भारत में मंदिर स्थापत्य के उद्भव और विकास की रूपरेखा को उनकी प्रादेशिक शैलियों और विभिन्नताओं का उल्लेख करते हुए प्रदर्शित कीजिये।
13. अरबन कॉमन्स क्या है? "अरबन कॉमन्स" के महत्त्व तथा इनके द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियों का विश्लेषण कीजिये। (250 शब्द)
14. "पृथक् नस्लवादी व्यवस्था उस जहरीले वृक्ष के समान थी जिसने आने वाले वर्षों में कड़वी फसल उत्पन्न की।" टिप्पणी कीजिये। (250 शब्द)
15. महात्मा गांधी और सुभाष चंद्र बोस अपने तरीके एवं पद्धतियों में तथा अपनी राजनीतिक एवं आर्थिक विचारधाराओं में व्यापक रूप से भिन्न थे। चर्चा कीजिये। (250 शब्द)
16. "पछिले कुछ वर्षों से भारतीय मानसून आगमन, वितरण तथा वर्षण प्रारूप में अत्यधिक परिवर्तनों से गुज़र रहा है।" वसितृत व्याख्या कीजिये। (250 शब्द)
17. क्या आप सहमत हैं कि महिलाओं के विवाह की वैधानिक उम्र बढ़ाने से भारत के लिये आर्थिक और सामाजिक लाभ सुनिश्चित होंगे? अपने दृष्टिकोण का

औचित्य सदिध करें। (150 शब्द)

18. स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान भारतीयों में राष्ट्रवाद की भावना को जगाने में प्रेस की भूमिका का विश्लेषण कीजिये। (250 शब्द)

19. वैश्वीकरण ने राज्यों की भूमिका को परिवर्तित किया है। विकासशील देशों के संबंध में इसके प्रभावों का समालोचनात्मक मूल्यांकन कीजिये। (250 शब्द)

20. जवाहरलाल नेहरू की नीतियों ने किस प्रकार राष्ट्र-निर्माण और स्वतंत्रता के बाद भारत के एकीकरण में मदद की? वविचना कीजिये।

20 Dec 2021 | रवीज़न टेस्ट्स | सामान्य अध्ययन पेपर 1

## दृष्टिकोण / व्याख्या / उत्तर

### उत्तर-1:

#### हल करने का दृष्टिकोण

- प्राचीन भारत की मुख्य मंदिर स्थापत्य शैली के बारे में संक्षेप में बताइये।
- उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिये किस प्रकार पहाड़ी वास्तुकला अन्य कला रूपों से भिन्न थी।
- उपयुक्त नक्षिण लिखिये।

### परिचय

प्राचीन और मध्यकालीन भारत के अधिकांश स्थापत्य अवशेष धार्मिक प्रकृतियों के हैं। देश के विभिन्न भागों में मंदिरों की विशिष्ट स्थापत्य शैली भौगोलिक, जातीय और ऐतिहासिक विविधताओं का परिणाम थी।

देश में मंदिरों की दो प्रसिद्ध शैलियाँ उत्तर में नागर और दक्षिण में द्रविड़ के नाम से जानी जाती हैं।

कभी-कभी मंदिरों की बेस शैली को एक स्वतंत्र शैली के रूप में देखा जाता है, जैसे नागर और द्रविड़ शैलियों के मश्रण के माध्यम से बनाया गया है।

### प्रारूप

- गांधार प्रभाव:** यह कुमाऊँ, गढ़वाल, हिमाचल और कश्मीर की पहाड़ियों में विकसित वास्तुकला का एक अनूठा रूप है। प्रमुख गांधार स्थलों (जैसे तकशशिला, पेशावर तथा उत्तर-पश्चिम सीमा) से कश्मीर की निकटता ने इस क्षेत्र को पाँचवीं शताब्दी तक एक मज़बूत गांधार प्रभाव क्षेत्र बना दिया।
- गुप्त और उत्तर-गुप्त परंपराओं का प्रभाव** सारनाथ, मथुरा और यहाँ तक कि गुजरात एवं बंगाल के केंद्रों से संबंधित है।
  - लक्ष्मण-देवी मंदिर में महिषासुरमर्दिनी और नरसिंहा की छवियाँ उत्तर-गुप्त परंपरा के प्रभाव का प्रमाण हैं। दोनों छवियाँ कश्मीर की धातु मूर्तिकला परंपरा के प्रभाव को दर्शाती हैं।
- पहाड़ी क्षेत्रों की छतों वाली काष्ठ इमारतों की भी अपनी परंपरा थी। इस क्षेत्र में कई स्थानों पर मुख्य गर्भगृह और शिखर, रेखा-प्रसाद या लैटिना शैली में बनाए गए हैं। मंडप, काष्ठ वास्तुकला का एक पुराना रूप है।
- कभी-कभी मंदिरों को पगोड़ा का आकार भी दे दिया गया है।
- सबसे महत्वपूर्ण मंदिरों में से एक पंडुरेथन है, जिसे आठवीं और नौवीं शताब्दी के दौरान बनाया गया था। मंदिर से जुड़ी एक पानी की टंकी की परंपरा को ध्यान में रखते हुए यह मंदिर एक तालाब के बीच में बने चबूतरे पर बनाया गया है।
- यह एक हट्टि मंदिर है और संभवतः शिव को समर्पित है। इस मंदिर की वास्तुकला लकड़ी की इमारतों की सदियों पुरानी कश्मीरी परंपरा के अनुरूप है।
- कश्मीर में बर्फ़ीले हालात के कारण पहाड़ी मंदिरों की छत नुकीली और हल्की सी बाहर की ओर झुकी हुई बनाई गई है।
- भारी नककाशी के गुप्तोत्तर सौंदर्यशास्त्र से दूर जाते हुए मंदिर को मध्यम रूप से अलंकृत किया गया है।
- हालाँकि कुमाऊँ, अल्मोड़ा में जागेश्वर और पथौरागढ़ के पास चंपावत मंदिर इस क्षेत्र में नागर वास्तुकला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

### नक्षिण

इस प्रकार बौद्ध और हट्टि दोनों परंपराएँ आपस में मिल गईं तथा पहाड़ी क्षेत्रों में वसित हो गईं जिसके परिणामस्वरूप वास्तुकला की एक अनूठी शैली अस्तित्व में आई।

### उत्तर-2:

#### हल करने का दृष्टिकोण:

- संकषपित ऐतहासिक पृष्ठभूमि से शुरू कीजिये।
- चर्चा कीजिये कि 1871 के बाद यूरोप में राष्ट्रवाद और साम्राज्यवाद ने कैसे तनाव पैदा किया।
- नषिकर्ष लखिये।

उन्नीसवीं शताब्दी की अंतिम तमिही तक राष्ट्रवाद, शताब्दी की पहली छमाही की अपनी आदर्शवादी उदारवादी-लोकतांत्रिक भावना को बरकरार नहीं रख पाया, बल्कि एक सीमित संकीर्ण पंथ बनकर रह गया। इस अवधि के दौरान राष्ट्रवादी समूह एक-दूसरे के प्रति असहषिणु हो गए और युद्ध के लिये हर समय तैयार रहते थे। प्रमुख यूरोपीय शक्तियों ने स्वयं के साम्राज्यवादी उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिये यूरोप में राष्ट्रवादी आकांक्षाओं वाले लोगों को गुमराह किया।

#### ■ राष्ट्रवाद

- प्रथम विश्व युद्ध का एक महत्वपूर्ण कारण राष्ट्रवाद की लहर थी जो पूरे यूरोप में बह रही थी। यह वास्तव में फ्राँसीसी क्रांति के वरिासतों में से एक था।
- इटली और जर्मनी में राष्ट्रवाद की शानदार जीत ने इसे नए जोश से भर दिया और इसे राजनीति में एक शक्तिशाली शक्ति बना दिया। इटली और जर्मनी का एकीकरण संभव था क्योंकि काबूर और बस्मार्क राष्ट्रवाद की भावना को जगाने में सफल रहे थे।
- इस प्रकार में, इसने लोगों के नस्लीय गौरव को बढ़ाया, उन्हें अपने देश को अन्य सभी से ऊपर उठाने के लिये प्रेरित किया और उन्हें अपने पड़ोसियों के प्रति अपने दृष्टिकोण में अभिमान बनाया। यह राष्ट्रवाद का अत्यधिक प्रसार था, जसिने जर्मनी और ग्रेट ब्रिटेन जैसे राज्यों की प्रतिद्वंद्विता को तेज किया।
- यह आक्रामक राष्ट्रवाद था जसिने यूरोपीय शक्तियों को एशिया, अफ्रीका और बाल्कन में उनके हितों पर कठाराघात के लिये प्रेरित किया।
- अंततः, बाल्कन लोगों की असामयिक राष्ट्रीय आकांक्षाएँ प्रथम विश्व युद्ध का तात्कालिक कारण बन गईं।

#### ■ साम्राज्यवाद

- औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरूप अधशेष पूंजी में वृद्धि हुई, जसिने वदिशों में निवेश को प्रोत्साहित किया, परिणामतः आर्थिक शोषण और राजनीतिक प्रतिस्पर्धा बढ़ गई।
- बाजारों, कच्चे माल और उपनिवेशों के लिये संघर्ष 19वीं शताब्दी के अंत और 20वीं शताब्दी की शुरुआत में एक महान जुनून बन गया क्योंकि जर्मनी और इटली भी 19वीं शताब्दी के अंतिम दो या तीन दशकों के दौरान इस दौड़ में शामिल हो गए थे। बढ़ती प्रतिस्पर्धा और अधिक साम्राज्यों की इच्छा के कारण टकराव में वृद्धि हुई जसिने दुनिया को प्रथम विश्व युद्ध में धकेल दिया।
- अंग्रेज़ केप से काहिरा तक, रूस ट्रांस-साइबेरियन रेलवे और जर्मन बगदाद रेलवे का निर्माण कर रहे थे। इसका कारण यह था कि रेलवे का निर्माण आर्थिक साम्राज्यवाद के सबसे महत्वपूर्ण रूपों में से एक था, साथ ही इसमें राजनीतिक और आर्थिक हित शामिल थे। रेलवे के निर्माण ने औपनिवेशिक शक्तियों के बीच हितों के टकराव को बढ़ा दिया।

साम्राज्यवादी वर्चस्व से जुड़े उग्र राष्ट्रवाद ने देशों के बीच दराव को बढ़ा दिया, साथ ही इसने सैन्यवाद और गठबंधनों के निर्माण के लिये ईंधन का काम किया। यह सब एक अभूतपूर्व विनाशकारी युद्ध में परिणत हुआ, जसिके परिणामस्वरूप 20 मिलियन से अधिक लोग मारे गए।

### उत्तर-3:

#### हल करने का दृष्टिकोण:

- सबसे पहले भारत में प्रागैतहासिक चित्रकला (वषियों एवं स्थानों) का संकषपित परिचय दीजिये।
- बताएँ कि प्रागैतहासिक चित्रकला हमें प्रारंभिक मानव की मनोदशा को समझने में कैसे सहायता करती है?
- वर्तमान में इन पेंटिंग्स का महत्व बताते हुए नषिकर्ष दीजिये।

प्रागैतहासिक काल पृथ्वी पर मानव सभ्यता के विकास का प्रारंभिक चरण था जहाँ मानव जंगली अवस्था में था और तब किसी भी प्रकार के शब्दों, भाषाओं और कागज़ों के साथ-साथ कोई लिखित पुस्तक अथवा दस्तावेज़ मौजूद नहीं थे। पेंटिंग एवं ड्राइंग मानव द्वारा स्वयं को अभिव्यक्त करने की प्राचीनतम कला के रूप में मानव द्वारा गुफाओं तथा उनकी दीवारों को अपने कैनवास के रूप में प्रयोग कर उन पर अपने मनोभावों को उकेरा।

उनके चित्रों के वषिय मानव आकृतियों, मानवीय गतिविधियाँ, ज्यामितीय डिज़ाइन तथा प्रतीक थे। भारत में प्रारंभिक शैलचित्रों के कुछ उदाहरण- उत्तराखंड में लाखुडियार, तेलंगाना में कुप्पललु, कर्नाटक में पकिलीहल तथा टेवकलफोहा व मध्य प्रदेश में भीमबेटका एवं जोगीमारा आदि प्रमुख हैं।

- ये प्रागैतहासिक चित्र हमें शुरुआती मानव, उसकी जीवन शैली, उनकी भोजन संबंधी आदतों तथा उनकी दिनचर्या को समझने में सहायता करते हैं, और इन सबसे बढ़कर ये चित्र उस समय के मानव की सोच को समझने में सहायता करते हैं।
- भीमबेटका में पाए गए चित्रों की वषियवस्तु अत्यधिक विविध है, जो उस समय की दैनिक घटनाओं से लेकर पवित्र एवं शाही चित्रों तक कई वषिय स्वयं में समाए हैं। इनमें शिकार, नृत्य, संगीत, घोड़े व हाथी सवार, जानवरों की लड़ाई, शब्द संग्रह, शवों का दाह संस्कार और अन्य घरेलू दृश्य शामिल हैं।
- मेसोलिथिक कलाकारों को जानवरों को चित्रित करना पसंद था। कुछ तस्वीरों में जानवर, मानवों का पीछा करते हुए दिखाए गए हैं। कुछ में मानवों द्वारा जानवरों का पीछा करना व शिकार करना दिखाया गया है।
- कुछ जानवरों के चित्र वषिषकर शिकार के दृश्यों में जानवरों का डर तथा कई अन्य चित्र उनके प्रति कोमलता व प्रेम की भावना को प्रदर्शित करते हैं।
- पुरुषों, महिलाओं व बच्चों की कुछ तस्वीरें पारिवारिक जीवन को दर्शाती हैं।
- चारकोलथिक काल के चित्रों से मालवा के मैदानी इलाकों में ऐसे कृषि समुदायों के साथ इस क्षेत्र की गुफाओं में रहने वालों के बीच संबंधों, संपर्क और पारस्परिक आदान-प्रदान का पता चलता है।
- कुछ सबसे खूबसूरत पेंटिंग्स शैलाशर्यों में ऊँचाई पर या छतों पर बनी हुई हैं। इन स्थानों पर बनाए गए चित्र शायद लोगों द्वारा दूर से ही पहचानने के लिये बनाए गए थे।

- चित्रों में जीवित रहने के लिये संघर्षरत व्यक्तियों तथा जानवरों को चित्रित किया गया है।
- अलग-अलग जानवरों में अंतर करने तथा उन्हें जीवंतता प्रदान करने में आदमि कलाकारों को महारत हासिल थी।
- भीमबेटका में कुछ स्थानों पर चित्रों की एक के ऊपर एक परतें मिलती हैं। ऐसा शायद इसलिये था कि कलाकार को अपनी पछिली पेंटिंग पसंद न आई हो या कुछ चित्र और स्थानों को पवित्र माना जाता था शायद अलग-अलग पीढ़ियों के लिये इनका महत्त्व अलग-अलग रहा हो।

अंततः देखा जाए तो प्रागैतहासिक काल के अवशेष मानव सभ्यता के विकास के महानतम गवाह हैं। कई पाषाण, औजारों, मृद्भांडों तथा हड्डियों के साथ-साथ चित्रित शैलाश्रय आदमि मनुष्यों द्वारा पीछे छोड़ी गई सबसे मूल्यवान संपत्ति हैं।

#### उत्तर-4:

##### हल करने का दृष्टिकोण:

- अंटार्कटिका का संक्षिप्त परिचय देते हुए भूमिका लिखिये।
- जलवायु संतुलन में अंटार्कटिका की भूमिका को बताइये।
- अंटार्कटिका में पारस्थितिक संतुलन को बनाए रखने की आवश्यकता पर बल देते हुए नषिकर्ष लिखिये।

अंटार्कटिका पृथ्वी पर दक्षिणतम महाद्वीप है, जो कलिगभग बर्फ से ढका हुआ भू-क्षेत्र है। यह सबसे ठंडा, सबसे शुष्क तथा सबसे तेज़ हवाओं वाला महाद्वीप है। जहाँ पृथ्वी पर मौजूद बर्फ का 90% (लगभग 26.9 मिलियन क्यूबिक किलोमीटर) है, जो पृथ्वी पर उपलब्ध मीठे जल का 70 प्रतिशत भाग है। इसके साथ ही अन्य महाद्वीपों से अलग यह वश्व की महासागरीय एवं वायुमंडलीय परसिंचरण प्रणालियों का महत्त्वपूर्ण चालक है और पृथ्वी पर तापमान संतुलन का मुख्य अंग है।

- विशाल अंटार्कटिका हमि चादर पृथ्वी की सतह से सौर विकिरण को परावर्तित करके एल्बीडो बढ़ाने में सहायक है।
- जैसे ही वैश्विक हमि चादरें पघिलती हैं या उनमें कमी होती है तो पृथ्वी का एल्बीडो कम हो जाता है। आधे सौर विकिरण के अवशोषण की दर में वृद्धि होती है, जिससे वैश्विक उष्णता में इजाफा होता है।
- अंटार्कटिका के चारों ओर स्थित महासागरीय जल वैश्विक 'महासागरीय कन्वेयर बेल्ट' का महत्त्वपूर्ण भाग है।
- दक्षिणी महासागर तीन मुख्य महासागरीय बेसिन (प्रशांत, हिंदि व अटलांटिक) को जोड़ता है और वैश्विक संचलन प्रणाली को संभव बनाता है तथा यह अंटार्कटिक सर्कुलर करंट द्वारा संचालित होता है।
- अंटार्कटिका के चतुर्दिक ठंडे जल को अंटार्कटिक बॉटम वाटर के नाम से जाना जाता है और वह अत्यधिक घनत्व युक्त है, जो कि सागर तल पर अपवेलिग का कारण बनते हैं।
- अंटार्कटिक अपवेलिग अत्यधिक शक्तिशाली है, जो कि पूरे ग्रह के चारों ओर जल को स्थानांतरित करने में सहायता करता है। जल की यह गति तीव्र अंटार्कटिक पवनों के कारण संचालित हो पाती है। बिना अंटार्कटिक महासागरीय संचलन के वैश्विक महासागरों में जल संतुलन संभव नहीं हो पाएगा।
- मौसम प्रतिक्रिया को प्रभावित करने में मुख्य भूमिका नभाने के साथ अंटार्कटिक पर्यावरण जलवायु परिवर्तन से संबंधित बहुमूल्य जानकारी उपलब्ध कराता है।
- अंटार्कटिक हमि चादरों में कुल वैश्विक मीथेन का 25% भंडारित है, जो बर्फ पघिलने के बाद जलवायु परिवर्तन में सबसे बड़ा योगदानकर्ता साबित हो सकता है।
- अंटार्कटिका की बर्फ पघिलने से समुद्र का स्तर 58 मीटर तक बढ़ सकता है, जो कि वश्व के अधिकांश द्वीपों और तटीय क्षेत्रों को डुबाने हेतु पर्याप्त होगा।

अंटार्कटिका वश्व की सबसे बड़ी प्राकृतिक प्रयोगशाला में से एक है, जो कि वैश्विक जलवायु परिवर्तन का अध्ययन करने में सहायक है। अंटार्कटिका का पर्यावरण वैश्विक जलवायु परिवर्तनों के लिये अत्यधिक संवेदनशील संकेतक है, जो वैश्विक जलवायु संतुलन को बनाए रखने में अहम भूमिका नभिता है।

#### उत्तर-5:

##### हल करने का दृष्टिकोण:

- सांप्रदायिकता को परिभाषित कीजिये।
- संक्षेप में चर्चा कीजिये कि कैसे ऐतहासिक रूप से भारत एक सहस्रिणु समाज रहा है।
- इसके उपरांत चर्चा कीजिये कि कैसे औपनिवेशिक शासन के दौरान सांप्रदायिकता एक बड़ी समस्या बन गई।
- उपयुक्त नषिकर्ष के साथ उत्तर पूर्ण कीजिये।

'सांप्रदायिकता' का अभिप्राय धार्मिक पहचान पर आधारित आक्रामक अहमन्यता अथवा मथियाभिमिन (Chauvinism) से है। अहमन्यता एक ऐसा दृष्टिकोण है जो अपने समूह को एकमात्र वैध या योग्य समूह के रूप में देखता है और दूसरे समूहों को हीन, अवैध एवं वरिधी मानता है। सांप्रदायिकता का मानना है कि विभिन्न धर्मों के लोगों के राजनीतिक और आर्थिक मामलों में अलग-अलग हति होते हैं, भले वे एक ही राष्ट्र या प्रांत में रहते हों। सांप्रदायिक हिसा सांप्रदायिक विचारधारा का ऊहात्मक परिणाम है।

प्राचीनकाल से ही भारत सनातन जैन, बौद्ध, इस्लाम, ईसाईयत जैसे विभिन्न धर्मों और संप्रदायों का देश रहा है। इस भूमि पर सबका स्वागत किया गया और ऐसा कोई दृष्टांत नहीं मिलता कि किसी व्यक्ति के साथ उसके धर्म के कारण किसी प्रकार की घृणा या दुराव किया गया हो।

आधुनिक राजनीति के उदय के परिणामस्वरूप सांप्रदायिकता में उभार आया जसिने प्राचीन या मध्ययुगीन या वर्ष 1857 से पूर्व की राजनीति के मध्य एक बड़े अंतराल को चिह्नित किया। उपनिवेशवाद के प्रभाव में भारतीय समाज में हुए रूपांतरण और उपनिवेशवाद के विरुद्ध संघर्ष की आवश्यकता के परिणामस्वरूप सांप्रदायिक चेतना को बल मिला।

- अंग्रेजों ने भारतीय इतिहास का एक विकृत संस्करण पेश किया और ऐतिहासिक कालक्रम को सांप्रदायिक विभाजन में प्रस्तुत किया। उन्होंने प्राचीन काल को हिंदू (बौद्ध, जैन आदि की उपेक्षा करते हुए) और मध्य काल को मुस्लिम (न केवल भक्ति व सूफ़ी आंदोलन की उपेक्षा करते हुए बल्कि अफगानों-तुर्कों के बीच सत्ता संघर्ष की अनदेखी करते हुए) काल के रूप में प्रस्तुत किया।
- हिंदुओं और मुसलमानों के बीच धार्मिक व सांस्कृतिक मतभेदों के प्रबलन अथवा स्वराघात तथा पृथक् सांप्रदायिक पहचानों के समेकन को विशेष रूप से वर्ष 1857 के विद्रोह के बाद 'फूट डालो और राज करो' (डविड एंड रूल) की सुचिंतित ब्रिटिश नीति द्वारा समर्थन दिया गया।
- सांप्रदायिक मांगों को आसानी से स्वीकार कर लिया गया जसिसे सांप्रदायिक संगठन राजनीतिक रूप से सशक्त हुए और लोगों पर उनका प्रभाव बढ़ता गया। उदाहरण के लिये, वर्ष 1885 से 1905 के बीच कॉन्ग्रेस ब्रिटिश सरकार से अपनी एक भी मांग नहीं मनवा सकी जबकि वर्ष 1906 में मुस्लिम सांप्रदायिक मांगों को वायसराय के समक्ष प्रस्तुत करते ही तुरंत स्वीकार कर लिया गया।
- बंगाल का विभाजन भी सांप्रदायिक दृष्टिकोण पर आधारित था क्योंकि ब्रिटिश सरकार ने धार्मिक आधार पर ही बंगाल का विभाजन किया था।
- ब्रिटिश सरकार ने सांप्रदायिक संगठनों और नेताओं को उनके समुदायों के वास्तविक प्रवक्ता के रूप में सहजता से स्वीकार कर लिया जबकि राष्ट्रवादी नेताओं को एक सूक्ष्म अल्पसंख्यक (कुलीन वर्ग) वर्ग का ही प्रतिनिधि माना गया।
- वर्ष 1909 में मुस्लिम समुदाय के लिये पृथक् नरिवाचक मंडल की स्वीकृति के साथ हिंदू-मुस्लिम संघर्ष के एक नए युग की शुरुआत हुई क्योंकि पृथक् नरिवाचक मंडल के मुद्दे ने सांप्रदायिक राजनीति के विकास में एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में कार्य किया।
- 'फूट डालो और शासन करो' की ब्रिटिश नीति को एक और अभिव्यक्ति अगस्त 1932 में सांप्रदायिक पंचाट की घोषणा से मिली। यह पंचाट इस ब्रिटिश सिद्धांत पर आधारित था कि भारत एक राष्ट्र नहीं है बल्कि नस्लीय, धार्मिक व सांस्कृतिक समूहों, जातियों और हितों का एक समूह है।
- अंग्रेजों ने सदैव हिंदुओं, मुसलमानों और सिखों को अलग-अलग समुदायों तथा सामाजिक-राजनीतिक निकायों के रूप में देखा जिनमें समानता के तत्त्व कम हैं। उन्होंने इन समुदायों के बीच आपसी विद्वेष को बढ़ावा दिया।

इस प्रकार भारत के ऐतिहासिक अतीत के आधार पर यह निष्कर्ष दिया जा सकता है कि अपने इतिहास के एक वृहत हिस्से में भारत एक शांतपूरण और सहिष्णु देश बना रहा है। तथापि अंग्रेजों के आगमन और उनकी औपनिवेशिक विस्तारवादी नीति ने भारत के सांस्कृतिक ताने-बाने को भंग किया तथा सांप्रदायिकता की उन शक्तियों को उन्मुक्त किया जो आज भी देश की शांति एवं स्थिरता को चुनौती दे रही हैं।

## उत्तर-6:

### हल करने का दृष्टिकोण:

- विस्तार नीति के अंतरनिहित कारणों को तथा शक्तियों को बताइये।
- संतुलित निष्कर्ष दीजिये।

लॉर्ड वेलेज़ली वर्ष 1798 में गवर्नर-जनरल बनकर भारत आया जसिके काल में ब्रिटिश साम्राज्य का अत्यधिक विस्तार हुआ। जसिने सहायक संधि का प्रयोग कर भारत में ब्रिटिश श्रेष्ठता स्थापित करने का प्रयास किया। इस प्रणाली ने भारत में अंग्रेज़ी साम्राज्य के प्रसार में विशिष्ट भूमिका निभाई।

### वेलेज़ली की विस्तार नीति के पीछे नहिती प्रमुख कारक

- वेलेज़ली भारत में ब्रिटिश शक्ति का प्रसार कर ब्रिटिश सरकार को भारत में संप्रभु बनाना चाहता था।
- यह भारत को ब्रिटिश अधीनस्थ बनाकर ब्रिटिश सर्वोच्चता स्थापित करना चाहता था।
- अन्य प्रमुख कारक फ्राँसीसी सत्ता को भारत से उखाड़ पेंकने की उसकी मंशा थी ताकि भारत में फ्राँसीसी प्रसार को रोक कर ब्रिटिश सर्वोच्चता स्थापित की जा सके।

### वेलेज़ली की विस्तार नीति के पीछे विद्यमान शक्तियाँ/ताकतें-

- वेलेज़ली के दशानरिदेशन में ईस्ट इंडिया कंपनी ने अधीनस्थ देशी राज्यों के साथ अहस्तक्षेप की नीति अपनाई तथा प्रचलित पूर्वगामी युद्ध नीतियों को समाप्त किया।
- सहायक संधि प्रणाली के तहत वेलेज़ली ने भारतीय राजाओं को ब्रिटिश सेना के लिये खर्च उठाने, अपने दरबार में एक ब्रिटिश रेजिडेंट रखने, कंपनी की अनुमति के बिना विदेश संबंध स्थापित न करने आदि हेतु बाध्य किया। जसिके बदले ब्रिटिश कंपनी द्वारा शत्रुओं से रक्षा करने तथा आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने की बात कही गई।
- इस नीति ने ब्रिटिश सेना का बिना अपना पैसा खर्च लिये सुदृढीकरण करने में अहम भूमिका निभाई।
- यह नीति ब्रिटिश कंपनी के लिये अत्यधिक लाभकारी सिद्ध हुई जसिने भारतीय राज्यों की सेना को सीमित करके ब्रिटिशों के लिये भारतीय साम्राज्य के द्वार खोल दिये।
- भारतीय राज्यों की विदेशी नीति को नियंत्रित करके इस नीति ने विदेशी शत्रुओं को भारत में हस्तक्षेप करने से दूर रखा।

सहायक संधि प्रणाली ने भारतीय राजाओं की संप्रभुता को छीनकर उन्हें ब्रिटिश सेना पर निर्भर बना दिया जसिने ब्रिटिश कंपनी को भारत में अपनी संप्रभुता स्थापित करने का एक स्वर्णमिव अस्त्र प्रदान किया तथा भारतीय राज्यों को औपनिवेशिक शोषण के अंधेरे की तरफ धकेल दिया।

## उत्तर-7:

### हल करने का दृष्टिकोण:

- वैश्वीकरण का संकषित परचिय दीजयि ।
- भारतीय युवाओं पर वैश्वीकरण के वभिन्न सामाजिक-आर्थिक प्रभावों की चर्चा कीजयि ।
- वैश्वीकरण के नकारात्मक प्रभाव को कम करने के लयि कुछ उपाय देते हुए नषिकर्ष लखियि ।

वैश्वीकरण वभिन्न देशों के लोगों, कंपनयिों और सरकारों के बीच वारता, एकता और परस्पर नरिभरता की प्रक्रयिा को संद्रभति करता है । इसमें राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक अभवियकता शामिल हैं । वैश्वीकरण का समाज पर सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों परणाम होते हैं ।

वैश्वीकरण का प्रभाव अत्यधिक व्यापक है । वैश्वीकरण का प्रभाव युवाओं में तीव्र परविरतन एवं अनश्चितता लाने हेतु उत्तरदायी है । इस प्रकार, वैश्वीकरण न केवल युवाओं के बीच आर्थिक अवसर प्रदान करता है, बल्कि सामाजिक परविरतनों हेतु भी उत्तरदायी है ।

- सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के साथ, भारत में युवाओं के पास अब एक वशाल संसाधन है । इसके परणामस्वरूप, उनमें वैश्विक मनोवैज्ञानिक चेतना का विकास हुआ है ।
- वैश्वीकरण ने खुले बाज़ार की अवधारणा के परणामस्वरूप रोज़गार के अधिक अवसर पैदा कयिे हैं ।
- वैश्वीकरण युवाओं में उत्कृष्टता प्राप्त करने तथा अधिक प्रतस्पर्धी बनने के लयि प्रोत्साहन एवं स्वतंत्रता प्रदान करता है ।
- इसने ग्रामीण भारत से बढ़ते प्रवासन के परणामस्वरूप शहरी गरीबी को जन्म दयिा है । यह समाज में संरचनात्मक असमानताओं को भी जन्म देता है । जाति, वर्ग, लयि, धर्म और आवास में वभिजन के परणामस्वरूप युवा लोगों में सुभेदयता, असथरिता और असुरक्षा की भावना बढ़ रही है ।
- वैश्वीकरण के पश्चात् पश्चिमी मूल्यों और संस्कृतिका अंधानुकरण हुआ है और युवाओं ने इसे अपनी भारतीय पहचान में शामिल कयिा है । जैसा कनि केवल आधिकारिक उद्देश्यों के लयि, बल्कि दैनिक जीवन में भी अंगरेज़ी भाषा युवाओं के बीच भारतीय भाषाओं पर हावी होती जा रही है ।
- वैश्वीकरण ने ववाह एवं परवार की संस्थाओं को भी प्रभावित कयिा है । आज युवा अपने बुजुर्गों के पास नहीं हैं, जसिके परणामस्वरूप सामाजिक संबंधों में अंतराल आए हैं ।
- वैश्वीकरण के परणामस्वरूप ही सामाजिक-आर्थिक अनश्चितता के बढ़ने से युवाओं में अवसाद तथा आत्महत्या की घटनाओं में वृद्धि हुई है ।
- वैश्वीकरण ने युवाओं में धार्मिक वशिवास को भी प्रभावित कयिा है । इस प्रकार अधिकांश धार्मिक गतिविधियिों युवा वर्ग के लयि अप्रासंगिक होती जा रही हैं ।
- सुखवाद की संस्कृति ने भारतीयों की पारंपरिक मान्यताओं को पूरणतः बदल दयिा है । नतीजतन, आज युवा आबादी, वशिष रूप से शहरी युवा पश्चिमी नए फेशन के पक्ष में हैं ।

युवाओं पर वैश्वीकरण के नकारात्मक प्रभाव को कम करने के लयि उन्हें शकिषा, कौशल विकास तथा रोज़गार, उद्यमता, स्वास्थय एवं स्वस्थ जीवन शैली आदि में अपनी पूरी क्षमता हासल करने के लयि सशक्त करना चाहयिि । राष्ट्रीय युवा नीति-2014 (एन.वाई.पी. -2014) में उल्लेखित सामाजिक मूल्यों का संवर्द्धन, सामुदायिक सहभागिता, राजनीति एवं शासन में भागीदारी, युवा सहभागिता, समावेश और सामाजिक न्याय जैसे कारकों जोर देना चाहयिि ।

## उत्तर-8:

### हल करने का दृष्टिकोण:

- भारत में व्याप्त जाति तथा आर्थिक असमानता से संबंधित कुछ आँकड़े या तथ्य के साथ उत्तर की शुरुआत कीजयि ।
- जाति तथा आर्थिक असमानता के मध्य संबंध स्थापित कीजयि ।
- जाति असमानता को समाप्त करने हेतु कयिे गए कुछ नीतगत उपायों का उल्लेख कीजयि ।

भारत में यह कहा जाता है कि 'संपत्ति अनुक्रम जाति अनुक्रम का अनुसरण करता है ।' वशि्व असमानता डेटाबेस के हाल के पत्र के अनुसार, भारत के उच्च जाति वर्ग के परिवारों ने वर्ष 2012 में राष्ट्रीय औसत वार्षिक घरेलू आय से लगभग 47 प्रतिशत अधिक धन अर्जित कयिा ।

वर्ष 2011-12 के एन.एस.एस.ओ. के आँकड़े दर्शाते हैं कि दिलितों के अपने स्वयं के उद्यम शुरु करने की संभावना न्यूनतम है जबकि दूसरों के लयि मज़दूरों के रूप में काम करने की संभावना अधिकतम है । इस आँकड़े के अनुसार, अनुसूचित जातियिों (एस.सी.) की स्व-नयोजित श्रेणी में हसिसेदारी सबसे कम है और असंगठित शर्मकियों की श्रेणी में उनका योगदान अधिकतम है ।

### भारत में जाति तथा आर्थिक असमानता के मध्य संबंध

- **शैक्षिक पछिडापन:** अनुसूचित जातियिों (एस.सी.) की साक्षरता दर लगभग 66% है जो राष्ट्रीय औसत दर 74% से भी कम है ।
- **अल्प आय रोज़गार:** शकिषा के अभाव के परणामस्वरूप नमिन जातिके लोग अल्प आय रोज़गार जैसे- कृषि शर्मकिये या गैर-कृषि क्षेत्र में कम कुशल शर्मकिये के रूप में कार्यरत हैं ।
- **परसंपत्तियिों का अल्प स्वामतित्व:** भारत में उच्च जातियिों के पास भूमिका स्वामतित्व है । भूमिहीन होने के कारण नमिन जातिके लोगों को अपनी आजीविका के लयि शारीरिक शर्म का सहारा लेना पड़ता है ।

### जाति असमानता के उनमूलन हेतु कयिे गए नीतगत उपाय

- **संवैधानिक उपाय:** जात के आधार पर भेदभाव को संवैधानिक उपायों द्वारा संबोधित किया गया है:
  - अनुच्छेद 15 धर्म, जाति, लिंग, वंश या जन्म स्थान के आधार पर भेदभाव का प्रतिषेध करता है।
  - अनुच्छेद 16 सार्वजनिक रोजगार के संदर्भ में अवसर की समानता सुनिश्चित करता है।
  - अनुच्छेद 46 राज्य को कमजोर वर्गों विशेषतः अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लोगों के शैक्षिक एवं आर्थिक हितों को बढ़ावा देने का प्रावधान करता है।
- **वधिक उपाय:** नमिनलखित अधिनियमों को नमिन जातवर्ग को उच्च जात के अत्याचार से बचाने के लिये प्रस्तुत किया गया।
  - अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम, 1989
  - नागरिक अधिकार संरक्षण अधिनियम, 1955
  - मैनुअल स्कैवेंजर्स के रूप में रोजगार का निषेध और पुनर्वास अधिनियम, 2013
- **आर्थिक उपाय:** वदियमान आर्थिक असमानताओं को दूर करने के लिये नमिन जातवर्ग को वत्तीय सहायता प्रदान करने हेतु नमिनलखित विभिन्न वत्तीय एजेंसियों की स्थापना की गई है:
  - राष्ट्रीय अनुसूचित जाति वत्त तथा विकास नगिम- अनुसूचित जातिवर्ग के बीच समृद्धि को बढ़ावा देने के लिये वत्तीय सहायता और कौशल विकास अन्य नवाचारी पहलों के माध्यम से उनकी स्थिति में सुधार करना।
- **राष्ट्रीय सफाई कर्मचारी वत्त एवं विकास नगिम:** सफाई कर्मचारियों के आर्थिक उत्थान के लिये जो अधिकांशतः नमिन जातवर्ग से आते हैं।
  - युवा उद्यमियों को बढ़ावा देने के लिये अनुसूचित जाति के लिये वेंचर कैपिटल फंड।
  - स्टैंड-अप इंडिया परियोजना और अनुसूचित जातियों के लिये ऋण संवर्द्धन गारंटी योजना।

## उत्तर-9:

### हल करने का दृष्टिकोण

- भारत छोड़ो आंदोलन के बारे में संक्षेप में बताइये।
- ब्रिटिश शासन के खिलाफ भारतीय लोगों को एकजुट करने में आंदोलन की सफलता पर चर्चा कीजिये।
- आंदोलन की वफिलता पर भी चर्चा कीजिये।
- उपयुक्त रूप से नषिकर्ष लखिये।

## परिचय

8 अगस्त 1942 को, महात्मा गांधी ने ब्रिटिश शासन को समाप्त करने का आह्वान किया और मुंबई में अखिल भारतीय कॉंग्रेस कमेटी के सत्र में भारत छोड़ो आंदोलन की शुरुआत की।

ग्वालिया टैंक मैदान में दिये गए अपने भाषण में गांधी जी ने "करो या मरो" का नारा दिया था।

- **आंदोलन के कारण**
  - आंदोलन का तात्कालिक कारण क्रिप्स मशिन का पतन था। मशिन वफिल हो गया क्योंकि इसने भारत को पूर्ण स्वतंत्रता नहीं बल्कि विभाजन के साथ डोमिनियन स्टेटस देने की पेशकश की।
  - द्वितीय विश्व युद्ध में भारत से अंग्रेजों को बना शर्त समर्थन की ब्रिटिश धारणा भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस द्वारा स्वीकार नहीं की गई थी।
  - ब्रिटिश वशिधी भावनाओं और पूर्ण स्वतंत्रता की मांग ने भारतीय जनता के बीच लोकप्रियता हासिल की थी।
- **आवश्यक वस्तुओं की कमी:** द्वितीय विश्व युद्ध के परिणामस्वरूप अर्थव्यवस्था चरमरा गई थी।

## आंदोलन की सफलता

### भवषिय के नेताओं का उदय:

- राम मनोहर लोहिया, जेपी नारायण, अरुणा आसफ अली, बीजू पटनायक, सुचेता कृपलानी आदि नेताओं ने भूमिगत गतिविधियों को अंजाम दिया जो बाद में प्रमुख नेताओं के रूप में उभरे।

### महिलाओं की भागीदारी:

- आंदोलन में महिलाओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। उषा मेहता जैसी महिला नेताओं ने एक भूमिगत रेडियो स्टेशन स्थापित करने में मदद की जिससे आंदोलन के बारे में जागरूकता पैदा हुई।

### राष्ट्रवाद का उदय:

- भारत छोड़ो आंदोलन के कारण देश में एकता और भाईचारे की एक वशिष्ट भावना पैदा हुई। कई छात्रों ने स्कूल-कॉलेज छोड़ दिये और लोगों ने अपनी नौकरी छोड़ दी।

## स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त:

- यद्यपि वर्ष 1944 में भारत छोड़ो आंदोलन को कुचल दिया गया था और अंग्रेजों ने यह कहते हुए तत्काल स्वतंत्रता देने से इनकार कर दिया था कि स्वतंत्रता युद्ध समाप्त के बाद ही दी जाएगी, कति इस आंदोलन और द्वितीय विश्व युद्ध के बोझ के कारण ब्रिटिश प्रशासन को यह अहसास हो गया कि भारत को लंबे समय तक नयित्तरति करना संभव नहीं था।
- इस आंदोलन के कारण अंग्रेजों के साथ भारत की राजनीतिक वार्ता की प्रकृति ही बदल गई और अंततः भारत की स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त हुआ।

## आंदोलन की असफलता

### करूर दमन:

- आंदोलन के दौरान कुछ स्थानों पर हिसा देखी गई, जो कि पूर्व नयोजति नहीं थी।
- आंदोलन को अंग्रेजों द्वारा हसिक रूप से दबा दिया गया, लोगों पर गोलियों चलाई गईं, लाठीचार्ज कयिा गया, गाँवों को जला दिया गया और भारी जुर्माना लगाया गया।
- इस तरह सरकार ने आंदोलन को कुचलने के लयिे हसिा का सहारा लयिा और 1,00,000 से अधिक लोगों को गरिफ्तार कयिा गया।

## समर्थन का अभाव

- मुसलमि लीग, भारतीय कमयुनसिट पार्टी और हद्वि महासभा ने आंदोलन का समर्थन नहीं कयिा। भारतीय नौकरशाही ने भी इस आंदोलन का समर्थन नहीं कयिा।
  - मुसलमि लीग, बँटवारे से पूर्व अंग्रेजों के भारत छोड़ने के पक्ष में नहीं थी।
  - कमयुनसिट पार्टी ने अंग्रेजों का समर्थन कयिा, क्योंकि वे सोवयित संघ के साथ संबद्ध थे।
  - हद्वि महासभा ने खुले तौर पर भारत छोड़ो आंदोलन का वरिध कयिा और इस आशंका के तहत आधिकारिक तौर पर इसका बहषिकार कयिा कि यह आंदोलन आंतरकि अवयवस्था पैदा करेगा और युद्ध के दौरान आंतरकि सुरक्षा को खतरे में डाल देगा।
- इस बीच सुभाष चंद्र बोस ने देश के बाहर 'भारतीय राष्ट्रीय सेना' और 'आज़ाद हद्वि सरकार' को संगठित कयिा।
- सी. राजगोपालाचारी जैसे कई कॉन्ग्रेस सदस्यों ने प्रांतीय वधियिका से इस्तीफा दे दिया, क्योंकि वे महात्मा गांधी के वधियार का समर्थन नहीं करते थे।

## नषिकर्ष

यह आंदोलन स्वतंत्रता के अंतमि चरण को इंगति करता है। इसने गाँव से लेकर शहर तक ब्रिटिश सरकार को चुनौती दी। इससे भारतीय जनता के अंदर आत्मवशिवस बढ़ा और समानांतर सरकारों के गठन से जनता काफी उत्साहति हुई। इसमें महिलाओं ने बढ़-चढ़ कर हसिसा लयिा और जनता ने नेतृत्व अपने हाथ में लयिा। जो राष्ट्रीय आंदोलन के परपिकव चरण को सूचित करता है। इस आंदोलन के दौरान पहली बार राजाओं को जनता की संप्रभुता स्वीकार करने को कहा गया। ज्ञातव्य है कि भारत छोड़ो आंदोलन में कमयुनसिट पार्टी व मुसलमि लीग ने भागीदारी नहीं की थी।

## उत्तर-10:

### दृष्टिकोण

- पश्चमि वकिषोभ को परभाषति करके उत्तर की शुरुआत कीजयि।
- भारतीय मौसम प्रणालयिों पर पश्चमि वकिषोभ के प्रभाव की चर्चा कीजयि।
- उपयुक्त नषिकर्ष दीजयि।

### परचिय

'पश्चमि वकिषोभ' एक मौसमी परघिटना है जो पछुआ पवनों के ऊपरी वायु परसिंरचरण क्षेत्त्र में वकिसति एक नमिन वायुदाब का क्षेत्त्र या गर्त है, जो हवा के तापमान, दाब एवं वायु संचार प्रणाली में परविरतन लाकर वर्षण की दशा उत्पन्न करता है।

ये हवाएँ राजस्थान, पंजाब और हरयिाणा में तीव्र गति से बहती हैं। ये उप-हमिलयी पट्टी के आस-पास पूर्व की ओर मुड़ जाती हैं और सीधे अरुणाचल प्रदेश तक पहुँच जाती हैं। इससे गंगा के मैदानी इलाकों में हल्की वर्षा और हमिलयी पट्टी में हमिवर्षा होती है।

### भारतीय मौसम प्रणालयिों पर पश्चमि वकिषोभ का प्रभाव:

- पश्चमि वकिषोभ भारत की कुल वार्षिक वर्षा के 5-10% हेतु उत्तरदायी होता है। यह उत्तर-पश्चमि भारत में सर्दयिों में होने वाली वर्षा और प्री-मानसून सीजन की बारशि का कारण है।
- पश्चमि वकिषोभ आमतौर पर बादल वाली रात, उच्च तापमान और असामान्य बारशि से जुड़ा होता है।
- गेहूँ सबसे महत्त्वपूर्ण फसलों में से एक है, जो भारत की खाद्य सुरक्षा को पूरा करने में मदद करती है। गेहूँ और अन्य रबी फसलों की वृद्धि में पश्चमि वकिषोभ से होने वाली वर्षा का बहुत महत्त्व है।

- हालाँकि भिन्न-भिन्न पश्चिमी वक्त्रों से अत्यधिक वर्षा होती है जो फसल क्षति, भूस्खलन, बाढ़ और हमिस्खलन का कारण बन सकता है।
- दूसरी ओर कमजोर पश्चिमी वक्त्रों से उत्तर भारत में फसल पैदावार में कमी और पानी से संबंधित समस्याएँ देखने को मिलती हैं।
- ये हिमालय के ऊपरी क्षेत्रों में हिमपात हेतु उत्तरदायी हैं जो भारत के सदाबहार नदियों की सततता एवं पर्यटन के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं।
- यह शीतकाल में वर्षा कर भूमि जल स्तर को ऊपर उठाने एवं जल संचयन को बढ़ावा देता है।
- यह प्रवासी पक्षियों के लिये अनुकूल दशा प्रदान करता है।
- यह संपूर्ण पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी की उत्पादकता व पोषण स्तर में वृद्धि लाता है।

## नषिकर्ष

पश्चिमी वक्त्रों को आमतौर पर एक अनुकूल लाभकारी घटना के रूप में देखा जाता है। हालाँकि जलवायु परिवर्तन के चलते बादल फटने और ओलावृष्टि जैसी प्राकृतिक आपदाएँ उत्पन्न होती हैं।

## उत्तर-11:

### हल करने का दृष्टिकोण:

- लगी आधारति हिसा से आप क्या समझते हैं, व्याख्या कीजिये।
- इन हिसा के कारणों पर प्रकाश डालिये।
- चर्चा कीजिये कि कैसे यह व्यवहार महिलाओं के विकास को गंभीर रूप से प्रभावित करता है।
- लैंगिक हिसा को समाप्त करने के लिये संक्षेप में सुझाव देकर नषिकर्ष लिखिये।

लगी आधारति हिसा, किसी व्यक्ति के विरुद्ध उसके लगी के कारण निर्देशित हिसा है। महिला और पुरुष दोनों लगी आधारति हिसा का अनुभव करते हैं लेकिन पीड़ितों में अधिकांश महिलाएँ और लड़कियाँ हैं। लगी आधारति हिसा एक ऐसी घटना है जो लैंगिक असमानता से गहराई से जुड़ी हुई है और सभी समाजों में सबसे प्रमुख मानव-अधिकारों के उल्लंघनों में से एक है। यह माँ के गर्भ से मृत्यु तक महिलाओं के पूरे जीवन चक्र में प्रकट होता है। लगी आधारति हिसा की कोई सामाजिक या आर्थिक पृष्ठभूमि नहीं होती तथा यह सभी सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि की महिलाओं और लड़कियों को प्रभावित करती है।

## लगी आधारति हिसा के विभिन्न कारणों में शामिल हैं:

### ■ सामाजिक/राजनीतिक/सांस्कृतिक कारण:

- भेदभावपूर्ण सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक कानून, मानदंड और व्यवहार जो महिलाओं और लड़कियों को हाशिये पर रखते हैं और उनके अधिकारों को मान्यता प्रदान करने में विफल होते हैं।
- महिलाओं के खिलाफ हिसा को सही ठहराने के लिये अक्सर लगी संबंधी रूढ़ियों का इस्तेमाल किया जाता है। सांस्कृतिक मानदंड अक्सर यह तय करते हैं कि पुरुष आक्रामक, नयित्तरति करने वाले और प्रभावी होते हैं जबकि महिलाएँ वनिम्र, अधीन और प्रदाताओं के रूप में पुरुषों पर निर्भर करती हैं। ये मानदंड एक प्रकार के दुरुपयोग की संस्कृति को बढ़ावा दे सकते हैं।
- पारिवारिक, सामाजिक और सांप्रदायिक संरचनाओं का पतन और परिवार के भीतर महिलाओं की बाधित भूमिका अक्सर महिलाओं और लड़कियों को जोखिम में डालती है और इसके निवारण के लिये मुकाबला करने वाले रास्तों एवं तंत्रों के जोखिम एवं सीमा को उजागर करती हैं।

### ■ न्यायिक बाधाएँ:

- न्याय संस्थानों और तंत्रों तक पहुँच का अभाव हिसा और दुरव्यवहार हेतु दंड के भय की समाप्ति की संस्कृति उत्पन्न करती है।
- पर्याप्त और वहनीय कानूनी सलाह और प्रतिनिधित्व का अभाव।
- पीड़ित/उत्तरजीवी और गवाह सुरक्षा तंत्र का पर्याप्त अभाव।
- अपर्याप्त न्यायिक ढाँचा जसमें राष्ट्रीय, पारंपरिक, प्रथागत और धार्मिक कानून शामिल हैं जो महिलाओं और लड़कियों के साथ भेदभाव करते हैं।

### ■ व्यक्तिगत बाधाएँ

- धमकी या कलंक का भय, अलगाव, सामाजिक बहिष्कार तथा अपराधी व्यक्ति के हाथों दोबारा हिसा, समुदाय या प्राधिकरण, गरिफ्तारी सहित नज़रबंद, दुरव्यवहार और सज़ा इत्यादिका भय रहता है।
- मानवाधिकारों के बारे में जानकारी की कमी और उपचार कैसे और कहाँ करना है।

### ■ नमिनलिखित कारणों से महिलाओं की उन्नति में लैंगिक हिसा सबसे बड़ी बाधाओं में से एक है:

- यह महिलाओं के स्वास्थ्य के सभी पहलुओं- शारीरिक, यौन और प्रजनन, मानसिक और व्यवहार संबंधी स्वास्थ्य को बुरी तरह प्रभावित करता है। इस प्रकार उन्हें अपनी पूर्ण क्षमता का एहसास होने से रोकता है।
- हिसा और हिसा का खतरा, सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में महिलाओं की सक्रिय रूप से और समान रूप से भाग लेने की क्षमता को प्रभावित करता है।
- कार्यस्थल पर उत्पीड़न और घरेलू हिसा कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी और उनके आर्थिक सशक्तिकरण को प्रभावित करता है।
- यौन उत्पीड़न लड़कियों के शैक्षिक अवसरों और उपलब्धियों को सीमित करता है।

समाज, सरकार और व्यक्तियों के सामूहिक प्रयासों से लगी आधारति हिसा (GBV) को समाप्त किया जा सकता है। नमिनलिखित कदमों से लगी संबंधी असमानता को मटिने में काफी मदद मिल सकती है:

- लगी आधारति हिसा को पहचानने और सहायता करने के लिये स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं का प्रशिक्षण सबसे महत्वपूर्ण तरीकों में से एक है।
- मीडिया लगी आधारति हिसा को सामने लाने, समाधान के वजिजापन, नीति-निर्माताओं को सूचित करने और जनता को कानूनी अधिकारों के बारे में

शक्ति करके तथा लगी आधारति हिसा को पहचानने में मुख्य भूमिका नभिया सकती है।

- शक्ति लगी आधारति हिसा को शुरू होने से पहले ही रोकने हेतु महत्त्वपूर्ण उपकरण है। नयिमति पाठ्यक्रम, यौन संबंधी शक्ति, परामर्श कार्यक्रम तथा वदियालयी स्वास्थ्य सेवाएँ, सभी यह संदेश दे सकते हैं कि हिसा गलत है और उसे रोका जा सकता है।
- कई अध्ययनों से पता चला है कि लगी आधारति हिसा को रोकने, पहचानने और संबोधित करने में सभी समुदायों को शामिल करना, इसे समाप्त करने का सबसे प्रभावी तरीका है।

## उत्तर-12:

सातवीं से नौवीं शताब्दी के मध्य दक्षिण भारत में अलवार और नयनार संतों के नेतृत्व में धार्मिक आंदोलनों का प्रादुर्भाव हुआ। पल्लव एवं चोल शासकों द्वारा इसी भक्तिपरंपरा को मंदिर स्थापत्य से जोड़ने एवं कालांतर में अन्य दक्षिण भारतीय राजवंशों द्वारा मंदिरों के निर्माण से दक्षिण भारत में मंदिर स्थापत्य की अनेक प्रादेशिक शैलियों का विकास हुआ, जो पारस्परिक भिन्नताएँ लिये हुई थीं।

### दक्षिण भारत में विकसित विभिन्न प्रादेशिक शैलियाँ

**द्रवडि शैली:** 7वीं से 8वीं शताब्दी के मध्य दक्षिण भारतीय पल्लव शासकों द्वारा तमलिनाडु के महाबलीपुरम् एवं कांचीपुरम् के शैलकृत एवं संरचनात्मक मंदिरों में द्रवडि मंदिर स्थापत्य के आरंभिक लक्षण देखने को मिलते हैं। आगामी चोल शासकों द्वारा इसी शैली को अपनाकर एवं इसमें परिष्करण कर इसे परिष्कृतता के उच्च स्तर पहुँचा दिया गया, जैसे- तंजौर का वृहदेश्वर मंदिर।

### द्रवडि शैली के मंदिर स्थापत्य की प्रमुख विशेषताएँ

- सीढ़ीदार परिमडिनुमा आकार में मंदिर के विमान की उपस्थिति।
- मंदिरों में प्रतमाओं के अंकनयुक्त गोपुरमों का निर्माण।
- मंदिरों में जलाशयों की उपस्थिति।
- मंदिर के गर्भगृह के प्रवेश द्वार पर द्वारपालों की भयानक आकृतियाँ।
- दीवारों और स्तंभों पर वास्तुकलात्मक डिजाइन।
- मंदिरों के चारों ओर चारदीवारी का निर्माण।

**मंदिर स्थापत्य की बेसर शैली:** कर्नाटक के दक्षिण भाग यानी कर्नाटक में चालुक्यकालीन एवं होयसलकालीन, अनेक शैलियों के संकरण एवं समावेशन से युक्त, बेसर शैली में मंदिर स्थापत्य का विकास हुआ। पट्टदकल में स्थित विष्णुपाक्ष मंदिर, पापनाथ मंदिर, ऐहोल का दुरगा मंदिर, लाडखान मंदिर एवं बेलूर का चैन्नाकेशव मंदिर इस शैली के मंदिर स्थापत्य के प्रमुख उदाहरण हैं।

### प्रमुख विशेषताएँ

- द्रवडि एवं नागर शैली के मंदिर स्थापत्य विशेषताओं का मश्रण एवं समावेशन।
- मुख्य पूजा स्थल/वेदी की बाहरी दीवारों पर अलंकरण।
- मानव आकृतियों, जैसे- रामायण एवं महाभारत के नायकों और प्रेमी युगल (मथिुन) की आकृतियों का अंकन इस शैली के मंदिर स्थापत्य की प्रमुख विशेषता है।
- भारी मात्रा में सजावट, जैसे- बेलूर का चैन्नाकेशव मंदिर।
- मंदिरों की दीवारों व स्तंभों पर हट्टि पौराणिक आख्यानों से संबंधित भित्तिचित्रों का निर्माण।
- 'कल्याण मंडपों' के रूप में नवीन मंडपों का निर्माण।
- सरोवरों के साथ मंदिरों का निर्माण, जैसे- हरे राम मंदिर, विष्णुपाक्ष मंदिर, रघुनाथ मंदिर, वट्टिल मंदिर एवं महानवमी डबिबा।

**नायक शैली:** वजियनगर शासन के पतन के पश्चात् 16वीं से 18वीं शताब्दी के मध्य नायक शासकों ने शासन किया। इन्होंने नायक/मदुरई शैली में अनेक मंदिरों का निर्माण करवाया। मदुरै का मीनाक्षी मंदिर इसका प्रमुख उदाहरण है।

### प्रमुख विशेषताएँ

- मंदिरों में लंबे गलियारों का निर्माण।
- नक्काशीदार सौ-स्तंभों व हजार स्तंभों वाले मंडपों की उपस्थिति।
- ऊँचे व बहुमंजली गोपुरमों का निर्माण।
- चमकीले पत्थर तथा पशुओं, देवताओं और राक्षसों की मूर्तियों द्वारा सजावट।

इस प्रकार अपनी विशिष्ट भौगोलिक स्थिति, स्थानीय परंपराओं तथा सामग्री की उपलब्धता, शासकों की व्यक्तिगत रुचि एवं विभिन्न शैलियों के संकट एवं समावेशन के फलस्वरूप दक्षिण भारत में अनेक प्रादेशिक शैलियों का विकास हुआ, जसिमें पर्याप्त विभिन्नताएँ वदियमान थीं।

**होयसल शैली:** चोलों और पांड्यों की शक्ति के अवसान के पश्चात् कर्नाटक के होयसल शासक दक्षिण भारत में वास्तुकला के प्रमुख संरक्षक के रूप में उभरे। बेलूर, हेलेसडि तथा सोमनाथपुर के मंदिर इनके द्वारा निर्मित मंदिरों में विशेष उल्लेखनीय हैं।

### प्रमुख विशेषताएँ

- केंद्रीय वर्गाकार योजना से आगे बढ़े हुए कोणों के कारण मंदिरों की तारकीय योजना।
- मंडपों के प्रवेश द्वार के रूप में 'मकर तोरणों' का निर्माण।
- पौराणिक महिला आकृति शालमंजिका/मदनिका का उत्कीर्णन।

## वजियनगर शैली

कर्नाटक के तुंगभद्रा क्षेत्र में पल्लव, चोल तथा पांड्यो की द्रवडि वास्तु शैलियों तथा सलतनतों द्वारा प्रस्तुत इस्लामिक वास्तुकला के सामंजस्यपूर्ण संयोजन से वजियनगर शैली के मंदिर स्थापत्य का विकास हुआ।

## महत्त्वपूर्ण लक्षण

- 'प्रोवादि' नामक स्वयं की शैली का विकास, जिसमें विशाल गोपुरम् तथा उत्कीर्णति स्तंभों का निर्माण करवाया गया।

## उत्तर-13:

### हल करने का दृष्टिकोण:

- अर्बन कॉमन्स को परभाषति कीजयि।
- अर्बन कॉमन्स के महत्त्व को रेखंकति कीजयि।
- इनके द्वारा सामना की जाने वाली वभिन्नि चुनौतियों की चर्चा कीजयि।
- इनके संरक्षण के उपाय सुझाइये।

अर्बन कॉमन्स अलग-अलग वकिसति होते शहरों में उन वरिले स्थानों को कहते हैं जिसका इस्तेमाल सामाजिक एवं आर्थिक असमानता के बावजूद सभी करते हैं। इन स्थानों में शहरों की सड़कें, हरे क्षेत्र, पार्क, पब्लिक स्क्वायर एवं सामुदायिक बाग-बगीचे शामिल हैं।

## अर्बन कॉमन्स का महत्त्व:

- झीलें, पार्क, आर्द्रभूमियाँ, नदियाँ यहाँ तक की सड़कों के कनारे लगे पेड़ भी वायु को स्वच्छ रखने, भौमजल स्तर को बढ़ाने तथा लोगों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने में सहायता करते हैं।
- ये देश के संकट/अभावग्रस्त वाले क्षेत्रों से शहरों में एकत्रति होने वाले प्रवासियों को जंगली पौधे, हरे पौधे और झाड़, नहाने, कपड़े धोने और शौच के लिये स्थान उपलब्ध कराते हैं एवं शीत ऋतु की रातों से सुरक्षा प्रदान कर उनके लिये पोषण संबंधी प्रतरोध एवं सुरक्षा जाल का कार्य करते हैं।
- अर्बन कॉमन्स द्वारा प्रदान की जाने वाली सबजियाँ, फल, जड़ी-बूटी, ईंधन के लिये लकड़ी, जल और चारों उनके चारों ओर रहने वाले समूहों के जीवन नरिवाह एवं आजीविका के लिये महत्त्वपूर्ण होते हैं।
- ये कसी जगह पर रहने वाले नागरिकों के मध्य नए संपर्क बनाने के लिये एक प्लेटफार्म की तरह कार्य करते हैं। इस तरह के संपर्क अकेलेपन के उस भय को कम कर सकते हैं जो समाज के अनेक वर्गों के बीच पनप रही है।

## अर्बन कॉमन्स द्वारा सामना की जाने वाली वभिन्नि चुनौतियाँ:

- शहरों में इनको सबसे अधिक खतरा वकिसात्मक गतिविधियों से है। जैसे मुंबई के आरे (aarey) के जंगल अवसंरचनात्मक परियोजनाओं के कारण खतरे में हैं, इसी तरह त्रिवनंतपुरम में तकनीक पार्क के निर्माण के लिये आर्द्रभूमिका अधग्रहण कया गया है एवं दक्षिण दिल्ली में भवनों के निर्माण के लिये पेड़ों को काटा गया है।
- अर्बन कॉमन्स को नजि क्षेत्रों अथवा समुदायों द्वारा वतितपोषण कया जाना पार्क, स्टेडियम, सड़क या फुटपाथ के निर्माण एवं रखरखाव तक ही सीमति है, वह भी एक सीमति संख्या में। अतः ये सरकारों पर नरिभर हैं, वशिष रूप से स्थानीय सरकारों पर, जो स्वयं वत्तीय रूप से कमजोर हैं।
- स्मार्ट शहरी योजनाएँ और पुनरुद्धार परियोजनाएँ अर्बन कॉमन्स पर अधिकतर नरिभर रहने वाले लोगों को हटाकर इन कॉमन्स को समाप्त करने का कार्य करती हैं। समुद्र तट, नदी कनारे की भूमि, झील एवं पार्क आदि को घेर कर रखा जाने लगा है और ये अब उन्हीं के लिये उपलब्ध हैं जो भुगतान कर सकते हैं। इनका उपयोग अब केवल मनोरंजन के लिये ही होने लगा है।
- शहरों के तेजी से वसितार होने के साथ बलिडर्स अब हासिल की गई आर्द्रभूमियों, बाढ़ के मैदानों या शहरों के नचिले इलाकों पर निर्माण कार्यों को अंजाम दे रहे हैं क्योंकि ये क्षेत्र सस्ते दामों पर मलि जाते हैं। सबसे आश्चर्य की बात यह है कि केवल नजि बलिडर्स बल्कि सरकार भी संवेदनशील क्षेत्रों में निर्माण कार्यों में लगी हुई है।

## इनके संरक्षण के उपाय:

- इसमें स्थानीय समुदायों को शामिल कर, झीलें एवं जलग्रहण क्षेत्रों को वैज्ञानिक तरीके से सुधार करके आर्द्रभूमियों को पुनः बहाल कया जाए।
- सरकार को वशिष भौगोलिक सूचना तंत्र (GIS) मानचित्र अवश्य बनाना चाहिये जहाँ कॉमन क्षेत्र एवं उनकी सीमाएँ स्पष्ट रूप से चनिहति की गई हों।
- शहरी समतियों के प्रबंधन एवं उनके अतकिरण से संरक्षण के लिये वार्ड समतियों को अवश्य ही सशक्त कया जाना चाहिये।

हालाँकि अभी भी सब समाप्त नहीं हुआ है, फरि भी यह बलिकूल स्पष्ट है कि हमारे शहर इसी तरह अवचलित नहीं रह सकते। यद्यपि कुछ जैव समृद्ध क्षेत्र बचे हैं परंतु हमें कड़े एवं ठोस उपाय करने होंगे। जल, भूमि और अपशष्टि माफिया के साथ-साथ बेतरतीब शहरीकरण एक चुनौती बनी हुई है। यदि ऐसा ही चलता रहा तो

शीघ्र ही हमारे भूदृश्य में जैव तत्त्व नज़र ही नहीं आएँगे।

## उत्तर-14:

### हल करने का दृष्टिकोण:

- पृथक् नरिवाचन व्यवस्था की पृष्ठभूमि को बताइये।
- इस व्यवस्था के प्रमुख प्रावधानों को बताइये।
- बताइये कि कैसे पृथक् नरिवाचन प्रणाली भारत-पाक वभाजन हेतु उत्तरदायी बनी।
- संकषित नषिकर्ष दीजिये।

भारत में व्यापक आरक्षण प्रणाली का उद्भव एक पृथक् नरिवाचन प्रणाली से हुआ, जिससे पहली बार भारतीय परिषद अधिनियम, 1909 के द्वारा परिचित कराया गया। पृथक् नरिवाचन प्रणाली का समुचित विश्लेषण करने से यह तथ्य प्रकट होता है कि यह प्रणाली 'ट डालो और राज करो' की नीति का एक उपकरण था जिसे ब्रिटिश सरकार ने भारतीयों को धर्म के आधार पर बांटने के लिये अपनाया।

### प्रमुख प्रावधान

- इस अधिनियम के तहत ब्रिटिश सरकार ने केंद्रीय व्यवस्थापिका सभा में सदस्यों की संख्या 16 से बढ़ाकर 60 कर दी। जिसके साथ 9 पदेन सदस्य नियुक्त किये गए।
- कुल 69 सदस्यों में से 27 सदस्य नरिवाचति होते थे। इन 27 सदस्यों में से 8 सीटें मुस्लिमों हेतु आरक्षित की गईं।
- मुसलमानों को पृथक् सामुदायिक प्रतिनिधित्व प्रणाली के तहत नरिवाचन का अधिकार दिया गया। साथ ही उन्हें प्रतिनिधित्व के मामले में विशेष रियायत दी गई। उन्हें केंद्रीय एवं प्रांतीय विधान परिषद में जनसंख्या के अनुपात में अधिक प्रतिनिधि भेजने का अधिकार दिया गया। हद्दियों के मुकाबले साथ की योग्यता मुस्लिमों के लिये कम रखी गई।
- 1919 के अधिनियम में इस प्रणाली का विस्तार अन्य समुदायों हेतु किया गया।

ब्रिटिश सरकार ने इस प्रणाली को इस उम्मीद में लागू किया कि वे भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष से मुस्लिमों को अलग रखने में सफल होंगे। जिसकी ही परिणती रही कि मुस्लिमों का भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष में योगदान कम रहा। जिसने हद्दियों एवं मुस्लिमों के बीच की खाई को और अधिक गहरा कर दिया। हालाँकि 1916 के कॉन्ग्रेस अधिवेशन में लीग एवं कॉन्ग्रेस की बीच समझौता हो गया था कि यह खाई इतनी गहरी थी कि जो इस समझौते से नहीं भर पाई। जल्द ही जिनना के नेतृत्व में पृथक् पाकिस्तान की मांग जोर पकड़ने लगी।

पृथक् पाकिस्तान की मांग ने इतना उग्र स्वरूप धारण कर लिया कि मुस्लिम लीग ने स्वतंत्रता संघर्ष में कॉन्ग्रेस का साथ छोड़ दिया तथा कृत्य किये। जिसने भारत में साम्प्रदायिक हिसा को बढ़ावा दिया। जिसके परिणामस्वरूप लॉर्ड माउंटबेटेन को भारत वभाजन की योजना प्रस्तुत करनी पड़ी तथा द्विषाट्टवाद के सिद्धांत को स्वीकारना पड़ा। 1947 में स्वतंत्रता के साथ ही भारत को वभाजन का दंश भी झेलना पड़ा।

## उत्तर-15:

### हल करने का दृष्टिकोण:

- गांधीजी तथा बोस का संकषित परिचय देते हुए भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी भूमिकाओं की चर्चा करें।
- चर्चा करें कि कैसे एक-दूसरे के प्रति गहरे सम्मान के बावजूद उनके तरीकों तथा विचारधाराओं में भिन्नता थी।
- उपयुक्त नषिकर्ष लिखें।

महात्मा गांधी संभवतः अहसिक नागरिक विद्रोह के लिये भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के सबसे व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त व्यक्तित्व थे। सुभाष चंद्र बोस (जिन्हें नेता जी भी कहा जाता है) को भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी भूमिका के लिये जाना जाता है। भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस के नेता के रूप में वे उग्र पक्ष का हिसा अधिक थे और समाजवादी नीतियों की वकालत के लिये जाने जाते थे। ये दोनों ही भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के दिग्गज थे तथा एक-दूसरे के प्रति गहरा सम्मान रखते थे।

गांधीजी, बोस को "देशभक्तों के बीच राजकुमार" कहते थे जबकि बोस भारतीय राष्ट्रवाद के प्रतीक के रूप में गांधी जी के महत्त्व से पूरी तरह से अवगत थे और उन्हें "देश के राष्ट्रपति" पुकारते थे।

अपने एकसमान लक्ष्यों तथा इच्छाओं और एक-दूसरे के प्रति सम्मान के बावजूद उनकी विचारधारा और कार्यप्रणाली में काफी अंतर था।

	गांधी जी	सुभाष चंद्र बोस
अहसा बनाम सैनिक दृष्टिकोण	<ul style="list-style-type: none"><li>■ अहसा और सत्याग्रह में विश्वास था।</li><li>■ जनता को केवल इसी आधार पर शामिल किया जा सकता है।</li></ul>	<ul style="list-style-type: none"><li>■ अकेले अहसिक प्रतिरोध ही भारत से विदेशी साम्राज्यवादी शासन को बाहर कर सकता है।</li></ul>
साधन और साध्य	<ul style="list-style-type: none"><li>■ साधन और साध्य समान रूप से अच्छे हैं।</li><li>■ साध्य प्राप्ति के लिये, कोई किसी भी साधन का प्रयोग नहीं कर सकता चाहे</li></ul>	<ul style="list-style-type: none"><li>■ बोस अपनी कार्यवाही के परिणामों पर नज़र रखते थे।</li><li>■ उन्होंने स्वतंत्रता के संघर्ष को आगे</li></ul>

	साध्य कतिना भी वांछनीय क्यों न हो।	बढ़ाने के लिये जो भी अवसर उपलब्ध था, उसे जब्त करने में विश्वास किया।
सरकार का स्वरूप	<ul style="list-style-type: none"> <li>■ पूर्व-आधुनिक, नैतिक रूप से प्रबुद्ध और अराजनीतिक भारत राज्य।</li> <li>■ उनके स्वराज के अनुसार व्यक्तियों और समुदाय के निर्माण द्वारा स्वशासन पर जोर होना चाहिये।</li> </ul>	<ul style="list-style-type: none"> <li>■ लोकतांत्रिक व्यवस्था अपर्याप्त होगी।</li> <li>■ यहाँ एक प्रकार का संश्लेषण होना चाहिये जैसे आधुनिक यूरोप “समाजवाद” या फासीवाद कहता है।</li> </ul>
अर्थव्यवस्था पर विचार	<ul style="list-style-type: none"> <li>■ गांधी जी के स्वराज की अवधारणा स्वदेशी के आर्थिक दृष्टिकोण पर आधारित थी।</li> <li>■ वे राज्य के नियंत्रण से मुक्त विकेंद्रीकृत अर्थव्यवस्था चाहते थे।</li> </ul>	<ul style="list-style-type: none"> <li>■ बोस ने आर्थिक स्वतंत्रता को सामाजिक और राजनीतिक स्वतंत्रता का सार माना।</li> <li>■ वे पूरणतः आधुनिकीकरण के पक्ष में थे जो औद्योगिकीकरण लाने हेतु आवश्यक था।</li> </ul>
धर्म	<ul style="list-style-type: none"> <li>■ उनका धर्म उनके अन्य सभी विचारों का आधार था।</li> </ul>	<ul style="list-style-type: none"> <li>■ सुभाषचंद्र बोस ने उपनिषद् की शिक्षा में विश्वास किया और वे विकानंद से प्रेरित थे।</li> </ul>
जाति और अस्पृश्यता	<ul style="list-style-type: none"> <li>■ समाज के लिये गांधी जी के 3 मुख्य लक्ष्य थे: अस्पृश्यता का उन्मूलन जाति व्यवस्था के वर्णभेद को बनाए रखना और सहिष्णुता, नम्रता और भारत में धर्मनिरपेक्षता को मजबूत करना।</li> </ul>	<ul style="list-style-type: none"> <li>■ बोस, समाजवादी क्रांति द्वारा भारत बदलने के पक्षधर थे जो अपनी जाति व्यवस्था के साथ पारंपरिक सामाजिक पदानुक्रम को समाप्त करेगा। इसके स्थान पर समतावादी, जातिविहीन, वर्गविहीन समाज आना चाहिये।</li> </ul>
महिलाएँ	<ul style="list-style-type: none"> <li>■ गांधी ने महिलाओं के बहादुरी और स्वतंत्रता के गुणों तथा दुःख सहन करने की क्षमता का प्रचार किया।</li> </ul>	<ul style="list-style-type: none"> <li>■ उन्होंने महिला मुक्ति, सदियों पुराने रीति-रिवाजों के बंधनों, पुरुषों द्वारा निर्धारित सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक अक्षमताओं से महिलाओं को स्वतंत्र कराने पर विश्वास किया।</li> </ul>
शिक्षा	<ul style="list-style-type: none"> <li>■ वे अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था के विरुद्ध थे।</li> <li>■ गांधी हिन्दू शास्त्रों को शिक्षा के भाग के रूप में शामिल करना चाहते थे ताकि वे आत्म संयम और अनुशासन स्थापित कर सकें।</li> </ul>	<ul style="list-style-type: none"> <li>■ सुभाष चंद्र बोस खासकर तकनीकी और वैज्ञानिक क्षेत्रों में उच्च शिक्षा के पक्षधर थे।</li> </ul>

गांधी जी तथा सुभाष चंद्र बोस अपनी अलग-अलग विचारधाराओं के बावजूद एक-दूसरे के प्रति गहन सम्मान रखते थे। प्रत्येक ने स्वतंत्रता के लिये राष्ट्रीय संघर्ष में एक दूसरे द्वारा किये गए कार्यों की सराहना की।

## उत्तर-16:

### हल करने का दृष्टिकोण:

- मानसून का संकषिप्त परिचय देते हुए इसकी निरंतरता की चर्चा कीजिये।
- भारतीय मानसून की प्रकृति में आए प्रमुख बदलावों को बताते हुए इसके पीछे विद्यमान कारणों को बताइये।
- मानसून की अनिश्चित प्रकृति के भारतीय जलवायु एवं कृषि पर पड़ने वाले प्रभावों को बताइये।

मानसून शब्द की उत्पत्ति अरबी शब्द ‘मौसमि’ से हुई है जिसका तात्पर्य पवनों की दिशा का ऋतुवत प्रत्यावर्तन से है इसका संबंध ग्रीष्म ऋतु में होने वाले वायुमंडलीय परिसंचरण में परिवर्तन से है। जिसके परिणामस्वरूप हवाएँ दक्षिण-पश्चिमी हिंद महासागर से आर्द्रता लाकर भारतीय उपमहाद्वीप में वर्षा करती है। भारतीय मानसून एक स्थायी प्रणाली है जिसमें पछिली कई सदियों से अत्यधिक परिवर्तन नहीं हुए हैं जो कालिगभग प्रतर्विष समान प्रतरूप में भारतीय उपमहाद्वीप में वर्षा करने हेतु उत्तरदायी है कति पछिले कुछ वर्षों से इसकी प्रकृति एवं आगमन में महत्वपूर्ण बदलाव देखे जा रहे हैं।

### मानसून की प्रवृत्ति में हालिया स्थानिक एवं कालिक परिवर्तन

- भारत में वर्षा ऋतु लगभग चार महीनों की मानी जाती है, यहाँ मानसून का आगमन जून माह के प्रथम सप्ताह में केरल तट पर होता है जो क्विंटीलर के अंतिम सप्ताह तक भारत से नवित्त होता है। कति पछिले कई वर्षों से इसकी इस प्रवृत्ति में परिवर्तन दर्ज किये गए हैं कई बार इसका आगमन मई के अंतिम सप्ताह में हो जाता है तो कई बार यह जून के द्वितीय सप्ताह में आती है इसी प्रकार नवित्तन में भी ऐसे ही परिवर्तन दर्ज किये गए हैं।
- दूसरा महत्वपूर्ण परिवर्तन वर्षण प्रतरूप में देखा गया है जब कहीं अतर्विष्ट तो कहीं अनावृष्टि देखी जाती है। आई.एम.डी. के अनुसार भारत के 22 महत्वपूर्ण नगरों में कुल 95% वर्षा केवल 27 दिनों में दर्ज की गई है। इसी के साथ अन्य परिवर्तन वर्षण प्रतरूप में अंतरक्षेत्रीय

असमानता के रूप में देखा गया है।

- कुछ क्षेत्रों जो कठिनाई में औसत वर्षा की प्राप्ति करते थे वहाँ सूखे की स्थिति दर्ज की गई तथा कुछ क्षेत्रों में अतृप्त एवं बादल फटने की घटनाएँ भी दर्ज की गई हैं।

वस्तुतः भारतीय मानसून में इन परिवर्तनों के पीछे कई प्राकृतिक एवं मानव जनित कारण वदियमान हैं जिनमें वैश्विक जलवायु परिवर्तन, एल नीना घटना, ला-नीना, इंडियन डाईपोल तथा मैडन जूलियन घटना प्रमुख हैं जिनसे भारतीय मानसून में क्षेत्रीय एवं कालिक भिन्नताएँ उत्पन्न होती हैं। भारतीय मौसम की अनिश्चितता में हुई इस वृद्धि से भारतीय जलवायु एवं कृषि पर कई नकारात्मक प्रभाव पड़ रहे हैं जिनमें भारतीय अर्थव्यवस्था को काफी नुकसान उठाना पड़ रहा है।

## उत्तर-17:

### हल करने का दृष्टिकोण:

- वधियों को संक्षिप्त में बताते हुए उत्तर की शुरुआत करें।
- चर्चा करें कि महिलाओं की शादी के लिये कानूनी उम्र बढ़ाने से भारत के लिये लाभ सुनिश्चित होंगे।
- शादी की उम्र बढ़ाने से उत्पन्न चिंताओं का उल्लेख करें।
- आगे की राह बताते हुए नष्कर्ष लिखें।

जून 2020 में, केंद्र सरकार ने महिलाओं के लिये विवाह की पूर्व निर्धारित कानूनी उम्र (18 वर्ष) को बदलने हेतु 10 सदस्यीय टास्क फोर्स का गठन किया है। महिलाओं की शादी की कानूनी उम्र बढ़ाने का यह प्रस्ताव भारत के आर्थिक और सामाजिक लाभ को बढ़ावा देने के संदर्भ में है। इसे निम्नलिखित तथ्यों के माध्यम से समझा जा सकता है-

- भारतीय स्टेट बैंक ने “महिलाओं की शादी की कानूनी उम्र बढ़ाना: सामाजिक रूप से अच्छा, आर्थिक रूप से सशक्त महिलाओं के लिये एक प्रभावी रणनीति”, शीर्षक से एक रिपोर्ट जारी की है। इस रिपोर्ट के अनुसार मातृत्व मृत्यु में कमी और पोषण के स्तर में सुधार से लड़कियों के लिये कॉलेज समयावधि में वृद्धि होगी तथा दीर्घावधि में यह प्रस्तावित कानूनी सुधार महिलाओं को अधिक वित्तीय स्वतंत्रता प्राप्त करने में सक्षम बनाएगा।
- यह सिर्फ उन महिलाओं और उनके परिवारों के लिये नहीं है जो कम उम्र में विवाह की समस्या से पीड़ित हैं, बल्कि यह पूरे देशवासियों के लिये है। वर्तमान में भारत के कार्यबल में महिलाओं का योगदान 18 प्रतिशत से अधिक नहीं है। बावजूद इसके काहम डिजिटल युग में जी रहे हैं, आज भी देश की अधिकांश महिलाएँ घरेलू कार्यों तक ही सीमित हैं।
- महिलाओं की श्रमशक्ति भागीदारी में मात्र 10 प्रतिशत की वृद्धि से वर्ष 2025 तक भारत के जीडीपी में + 770 बिलियन की वृद्धि हो सकती है। साथ ही, सशक्त महिलाएँ जो उद्यमी बन जाती हैं, अकेले ही अगले दशक में 150 मिलियन से 170 मिलियन नौकरियों को जोड़ने में सक्षम हैं।
- भारत की युवा जनसांख्यिकी से पता चलता है कि यदि वर्ष 2027 तक 234 मिलियन श्रमिकों को श्रमशक्ति से जोड़ दिया जाए तो यह दुनिया की सबसे बड़ी श्रमशक्ति बन सकती है। वहीं शक्ति और प्रशिक्षित महिला श्रमिकों की एक बड़ी संख्या को श्रमबल में शामिल करने से यह पूरे देश के लिये एक अभूतपूर्व बदलाव साबित हो सकता है।
- आर्थिक संपदा से इतर, महिलाओं को सशक्त बनाने से भारत के प्रसन्नता सूचकांक में योगदान मिलेगा और इससे अकल्पनीय समृद्धि आएगी।
- दुर्भाग्यवश, भारत भी दुनिया में सर्वाधिक मातृ मृत्यु दर वाले देशों में से एक है। बाध्यकारी मातृत्व से ग्रस्त कई युवा महिलाएँ एनीमिया, एचआईवी/एड्स संक्रमण जैसी गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं के लिये अतिसंवेदनशील होती हैं। ऐसी महिलाओं के घरेलू हिंसा का शिकार होने के साथ ही बच्चों को जन्म देने की संभावना अधिक होती है, चूँकि वे खुद अल्पवयस्क होती हैं, अतः गर्भावस्था और प्रसव के दौरान जटिलताएँ भी उत्पन्न हो सकती हैं। इसलिये, महिलाओं की शादी के लिये कानूनी उम्र बढ़ाने से मातृ मृत्यु दर को कम करने जैसे सामाजिक लाभ प्राप्त होंगे।

### शादी की उम्र बढ़ाने से उत्पन्न चिंताएँ:

- भारत में 21 वर्ष की आयु तक अधिकांश महिलाओं का विवाह हो जाता है, अतः महिलाओं के विवाह की आयु बढ़ाने का कानूनी निर्णय इन महिलाओं और उनके परिवारों को अपराधीकरण की ओर ले जाएगा।
- शादी की कानूनी उम्र बढ़ाने से उन युवा वधियों के हकों और अधिकारों की हानि भी होगी जो पहले से ही असुरक्षित हैं।
- प्रस्तावित कानूनी सुधार के बारे में यह चिंता व्यक्त की जा रही है कि इससे बाल विवाह को रोकने की बजाय युवा सहमति वाले जोड़ों को अधिक नुकसान होगा। अध्ययनों से पता चलता है कि माता-पिता मुख्य रूप से मौजूदा कानूनों का इस्तेमाल कुंडली विवाह कराने के लिये करते हैं।
- शादी की कानूनी उम्र बढ़ाना, माता-पिता को अपनी बेटी के निर्णय लेने और महिला की पसंद के ऊपर अधिक नियंत्रण को बढ़ावा देगा।
- शादी की न्यूनतम उम्र बढ़ाना, उचित रूप से एक प्रगतिशील कदम है, लेकिन यह ग्रामीण भारत में महिलाओं को सशक्त बनाने की बजाय दलित और आदिवासी समुदायों की मौजूदा कमज़ोरियों और अपराधीकरण को बढ़ावा देता है।

नष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भारत में बाल विवाह के संदर्भ में किये जाने वाले प्रयास सामाजिक-आर्थिक वास्तविकताओं के अनुरूप होने चाहिये जो महिलाओं के लिये शिक्षा, कल्याण और अवसरों में नविश की मांग को बढ़ावा दे सकें।

## उत्तर-18:

### हल करने का दृष्टिकोण:

- संकषपित परचिय से आरंभ कीजिये ।
- राष्ट्रवाद उत्पन्न करने में प्रेस की भूमिका का विश्लेषण कीजिये ।
- राष्ट्रवाद को विकसित करने में प्रेस की भूमिका के साथ नषिकर्ष दीजिये ।

ब्रिटिश शासन के दौरान करान्तकारियों एवं स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा जिस सबसे बड़ी समस्या का सामना करना पड़ता था वह था भारतीयों के बीच सूचनाओं के समुचित प्रसार के लिये उपयुक्त माध्यमों की कमी । इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये प्रेस ने एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की । इसने लोगों में राष्ट्रवाद एवं एकता की भावना को जगाया तथा उन्हें राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेने के लिये प्रेरित किया ।

### भारतीयों में राष्ट्रवाद उत्पन्न करने में प्रेस की भूमिका:

- प्रेस द्वारा सामाजिक या राजनीतिक जागरूकता का प्रसार किये जाने के फलस्वरूप राष्ट्रीय आंदोलन संभव हो सका । प्रेस ने लोगों को भारत में उनकी हालत के बारे में जागरूक करने का कार्य किया ।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) की स्थापना ने भी लोगों में राष्ट्रवादी आकांक्षाओं को मजबूत किया । भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कई प्रमुख सदस्य, जैसे- दादा भाई नौरोजी, एम. जी. रानाडे नरेंद्रनाथ सेन आदि प्रख्यात पत्रकार और संपादक थे ।
- अनेक भारतीय किसान नील के सौदागरों एवं औपनिवेशिक सरकार द्वारा शोषित किये जा रहे थे । अखबारों ने किसानों के इन मुद्दों को उठाया और उनके लिये संघर्ष भी किया ।
- इन अखबारों के माध्यम से इनके संपादक ब्रिटिश सरकार के विभिन्न कानूनों एवं नीतियों की छानबीन करते थे । उन्होंने ब्रिटिश सरकार तथा उनके कार्यों के खिलाफ संघर्ष छेड़ा एवं जनता को राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेने के लिये सदैव प्रोत्साहित किया ।
- प्रेस ने ब्रिटिश सरकार के अनेक औपनिवेशिक कठोर कानूनों के खिलाफ संघर्ष किया ।
- जनता तक प्रेस की पहुँच व्यापक थी, उसने देश में प्रख्यात पुस्तकालय आंदोलन को हवा दी । पुस्तकालय आंदोलन केवल शहरों या नगरों तक सीमित नहीं था बल्कि यह दूरदराज के गाँवों तक भी फैला था जहाँ प्रत्येक व्यक्ति अखबार एवं उसके संपादकीय पढ़ सकता था और उस पर चर्चा कर सकता था । इसने भारतीयों में राजनीतिक जागरूकता बढ़ाने में सहायता की । यही जागरूकता बाद में स्वतंत्रता संघर्ष में राजनीतिक भागीदारी के रूप में तब्दील हुई ।

इस तरह प्रेस ने राष्ट्रीय आंदोलन के विकास एवं समेकन में, राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय साहित्यों के सृजन में, संस्कृति में तथा वाह्य दुनिया के प्रगतशील लोगों एवं वर्गों के साथ भ्रातृत्व को गढ़ने में नरिणायक भूमिका अदा की ।

### उत्तर-19:

#### हल करने का दृष्टिकोण:

- 'वैश्वीकरण' की संकषपित परिभाषा दीजिये ।
- संबंधित विभिन्न आयामों को परिभाषित कीजिये जिसमें वैश्वीकरण ने राज्य की भूमिका को प्रभावित किया है ।
- विकासशील देशों पर वैश्वीकरण के प्रभाव की चर्चा कीजिये ।
- वैश्वीकरण के प्रभावों का मूल्यांकन कर आगे की राह बताते हुए नषिकर्ष लिखिये ।

वैश्वीकरण विभिन्न देशों के लोगों, कंपनियों और सरकारों के मध्य अंतरक्रिया और एकीकरण की प्रक्रिया है । यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो अंतरराष्ट्रीय व्यापार एवं निवेश द्वारा संचालित और सूचना प्रौद्योगिकी द्वारा सहायता प्राप्त है ।

बहुआयामी और वैश्विक प्रकृति की यह प्रक्रिया विश्वभर के समाजों के पर्यावरण, संस्कृति, राजनैतिक व्यवस्था, आर्थिक विकास एवं संवृद्धि और मानव के भौतिक सुख को प्रभावित करती है । 21वीं सदी में एक विचारधारा और प्रक्रिया दोनों के रूप में वैश्वीकरण प्रभावशाली राजनीतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक ताकत बन चुका है और राज्यों की भूमिका को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है ।

### राजनीतिक भूमिका में परिवर्तन:

- वैश्वीकरण ने अंतर-राज्यीय संबंधों और एक-दूसरे पर निर्भरता को मजबूत बनाते हुए राज्य की भूमिका को राजनीतिक रूप से परिवर्तित कर दिया है । राज्यों का गठन संप्रभु होने के लिये किया गया था परंतु अब वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप व सम्मेलनों, अनुबंधों, दबावों और अधिपतियों से स्वयं को एकीकृत करने के लिये प्रायः अपनी संप्रभुता से समझौता कर लेते हैं । इससे राज्यों के अधिकार क्षेत्र में समान रूप से वृद्धि हुई है और सत्ता को राजनीतिक प्रगति के बजाय एक आर्थिक ताकत के रूप में देखा जा रहा है क्योंकि राज्य अब एक साथ राजनीतिक प्रगति और प्रतगिमन करते हैं, जिससे वे अधिक विकासप्रिय हो जाते हैं ।

### आर्थिक भूमिका में परिवर्तन:

- वैश्विक आर्थिक परिवर्तनों का राज्य की भूमिका पर अधिक प्रभाव पड़ता है । वैश्विक अर्थव्यवस्था ऑनलाइन बैंकिंग, शेयर बाजारों और वृहद् स्तर पर वैश्विक फ्रेंचाइजी द्वारा निर्मित होती है । अमूरत परसिंपतता और आयात के साथ-साथ ऑनलाइन एवं इलेक्ट्रॉनिक बैंकिंग तथा कई राज्यों के मध्य एक साझा मुद्रा (जैसे- यूरोप में) के प्रयोग के कारण अब राज्यों का मुद्रा पर पर्याप्त नियंत्रण नहीं है ।
- वैश्विक बाजार मानकों को अपनाने हेतु देशों को प्रभावित करने में डब्ल्यू.टी.ओ. जैसे अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की प्रमुख भूमिका है ।

### सामाजिक आयाम:

- सामाजिक वैश्वीकरण ने मानवाधिकारों के उल्लंघन, बाल श्रम की समस्या और भ्रष्टाचार के संबंध में व्यापक स्तर सामाजिक जागरूकता का प्रसार किया है। परणामस्वरूप यह चुनौतियाँ लोक प्रशासन एवं सरकार की भूमिका को प्रभावित करती हैं। कॉर्पोरेट क्षेत्र को वैश्विक बनाने के लिये सार्वजनिक-नज्दी क्षेत्रों के व्यवस्था-प्रारूप में बड़े परिवर्तनों ने संसाधनों के आवंटन, धन का वितरण, अर्थव्यवस्था के स्थिरकरण और आर्थिक विकास में सरकार की अग्रणी भूमिका को परिवर्तित कर दिया है।

## विकासशील देशों पर प्रभाव

### लाभ

- आर्थिक एकीकरण के माध्यम से आर्थिक विकास में वृद्धि तथा गरीबी की समस्या, आर्थिक विकास, गरीबी आदिके समाधान द्वारा यह विकासशील देशों को सहायता प्रदान करता है।
- राज्य और उसकी कार्यवधियों का मॉडल भी राजनीतिक वधियों के स्वतंत्र प्रवाह के परणामस्वरूप विकसित होता है।
- सरकार द्वारा स्वास्थ्य, शिक्षा एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नीतितगत पहल का नेतृत्व करना वैश्वीकरण का प्रत्यक्ष परणाम है।
- भारत में LGBTQ समुदाय के अधिकारों पर हाल में लिये गए नरिणय नागरिकों को अधिकार प्रदान करने में राज्य की परिवर्तित भूमिका का आदर्श उदाहरण है।

### हानियाँ

- विश्व व्यापार संगठन में भारत की अनुदान व्यवस्था से संबंधित मामले वैश्विक स्तर पर प्रमुख शक्तिशाली देशों के हस्तक्षेप को दर्शाते हैं।
- वैश्वीकरण वभिन्न देशों के बीच यात्रियों के आवागमन के कारण विकासशील देशों में नए रोगों के प्रसार में सहायता करता है और विकासशील देशों में इन रोगों से निपटने की क्षमताओं में कमी के कारण उन्हें विकसित देशों पर निर्भर रहना पड़ता है।
- विकासशील देशों में कुशल मानव श्रम में कमी आई है क्योंकि अन्य देशों में कुशल मानव श्रम के उच्च अवसर उपलब्ध होने के कारण वे आसानी से पलायन कर जाते हैं।
- वैश्वीकरण ने विकासशील देशों में आर्थिक असमानता का नेतृत्व किया है।
- इस प्रकार वैश्वीकरण ने राज्यों की भूमिका को वभिन्न तरीकों से परिवर्तित किया है: राज्यों की अंतरनिर्भरता व स्वतंत्रता के माध्यम से राजनीतिक रूप से, आतंकवाद व घातक बीमारियों की समस्या के कारण सामाजिक रूप से, मीडिया तथा इंटरनेट के माध्यम से तकनीकी रूप से और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था से वैश्विक अर्थव्यवस्था में परिवर्तन के कारण आर्थिक रूप से।

वैश्वीकरण को प्रायः राज्यों के महत्त्व को कम करने के रूप में उल्लेखित किया जाता है लेकिन अंततः वहीं राज्य सफल होंगे जो वैश्वीकरण के इस दौर में परिवर्तित भूमिकाओं को तीव्रता से अपनाएंगे।

## उत्तर-20:

### दृष्टिकोण

- उत्तर की शुरुआत नव स्वतंत्र भारत के सामने आने वाली चुनौतियों को संक्षेप में बताते हुए कीजिये।
- स्वतंत्रता के बाद के सुदृढीकरण और राष्ट्र निर्माण में नेहरू की भूमिका पर चर्चा कीजिये।
- उपयुक्त नषिकर्ष लिखिये।

### परिचय

वर्ष 1947 में भारत को स्वतंत्रता तो मिली लेकिन एक राष्ट्र के रूप में इसे बहुत कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। उदाहरण के लिये स्वतंत्रता देश के वभिजन और सांप्रदायिक हिंसा के साथ आई। पूरा देश गरीबी, अशिक्षा और विकास की कमी के बोझ तले दब गया था। विदेश नीतिके मोर्चे पर, भू-राजनीतिक शीत युद्ध की शुरुआत देख रही थी।

इस परिदृश्य में, जवाहरलाल नेहरू स्वतंत्र भारत के पहले प्रधानमंत्री बने और कई सुधारों एवं नीतियों की शुरुआत की जिन्होंने राष्ट्र निर्माण तथा स्वतंत्रता के बाद भारत के एकीकरण में मदद की।

- **राष्ट्र का एकीकरण:** नेहरू ने लोगों की क्षेत्रीय आकांक्षाओं को पूरा करने के लिये राज्य पुनर्गठन समितिकी स्थापना की ताकि उनके राष्ट्र से अलग होने की संभावना कम हो जाए।
- **शरणार्थियों का पुनर्वास:** पाकिस्तान के शरणार्थियों को आश्रय दिया गया और सांप्रदायिकता को कम करने के प्रयास किये गए।
- **धर्मनिरपेक्षता:** विशेष रूप से नेहरू के प्रयासों के कारण ही भारत बीसवीं शताब्दी के मध्य में एक धर्मनिरपेक्ष राज्य के रूप में उभरा।
- स्वतंत्रता से बहुत पहले, उन्होंने भारतीय राजनीतिके लिये एक धर्मनिरपेक्ष आधार के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
- इससे 'अनेकता में एकता' के आख्यान के निर्माण में मदद मिली।
- **कल्याणकारी राज्य:** नेहरू एक व्यावहारिक आदर्शवादी थे और उनका मानना था कि समाजवाद तथा लोकतंत्र परस्पर वरिधी नहीं बल्कि एक दूसरे के पूरक हैं।
- वह धन के समान वितरण के लिये एक कल्याणकारी राज्य का निर्माण करना चाहते थे।
- **योजना आयोग:** एक व्यावहारिक समाजवादी के रूप में जवाहरलाल नेहरू ने एक ऐसे देश में कल्याणकारी राज्य के महत्त्व को समझा, जिसके पास पर्याप्त बुनियादी ढाँचा उपलब्ध नहीं था और सामाजिक कल्याण हेतु दीर्घकालिक योजना के लिये एक योजना आयोग की स्थापना की।

- **गुटनरिपेक्ष नीति (NAM):** वदिश मंत्री होने के नाते, नेहरू कसिी भी शक्तिगुट में शामिल नहीं होना चाहते थे। साथ ही वह नहीं चाहते थे कि भारत वशि्व राजनीतिसे अलग रहे। इसलिये अन्य तीसरी दुनिया के देशों के साथ NAM स्थापति करने का नेहरू का दूरदर्शी दृष्टिकोण एक आदर्श वदिश नीति दृष्टिकोण साबति हुआ।

### नषिकरष

कठनि चुनौतियों का सामना करने के बावजूद नेहरू राष्ट्र को मज़बूत बनाए रखने में सफल रहे। उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन की परंपराओं को आगे बढ़ाते हुए नवजात राष्ट्र भारत का पोषण किया। यही कारण है कि उन्हें व्यापक रूप से आधुनिक भारत के वास्तुकारों में से एक के रूप में प्रशंसति किया जाता है।

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/be-mains-ready-daily-answer-writing-practice-question/papers/2021/full-length-test-gs-i/print>